Inspira- Journal of Modern Management & Entrepreneurship (JMME)
ISSN : 2231–167X, General Impact Factor : 2.7282, Volume 09, No. 01, January, 2019, pp. 229-235

dyk] foKku ,oa okf.kT; ldk;ksa dk Lukrd Nk=&Nk=kvksa dh lek;kstu'khyrk dk v/;;u

नितिशा सिंह*

izLrkouk

आज का मानव अपनी सुख–सुविधाओं के लिये भौतिकता के विभिनन आयामों की ओर अनवरत् बढ़ता जा रहा है। भैतिक सुख की आकांक्षाओं ने उसके चिन्तन और चेतना के द्वार को अनेक प्रकार की सृजनात्मकता से ओत–प्रोत किया है। यही कारण है कि उसने सागर की असीम गहराई से लेकर व्योम की अनन्त नीलिमा तक पहुँचने में पर्याप्त सफलता अर्जित की है। किन्तु उसकी कभी न बुझने वाली भौतिक पिपासा ने जहाँ एक ओर उसे प्रगतिशील बनाया है, वहीं दूसरी ओर उसमें अनेक प्रकार की विसंगतियों को भी जन्म दिया है। यही कारण है कि भौतिकता की चकाचौंध में डूबकर भी मानव अपने आपको अशान्त पा रहा है, क्योंकि उसका सरल हृदय कुंठाओं, द्वन्द्वों एवं दुश्चिन्ताओं से प्रभावित होने के कारण विघटन व विर्सजन से आच्छादित हो रहा है। ऐसी स्थिति में उसका जीवन–दर्शन व जीवन शैली दोनों ही स्थिरता प्राप्त नहीं कर पा रहे हो। ऐसे परिदृश्य में अपनी संवेगात्मक अस्थिरता के कारण उसका हृदय निरन्तर हा–हा कार करता रहता है। चाहकर भी वह प्रगाढ़ निद्रा का सुख नहीं ले पाता है। यद्यपि इसके लिये वह अनेक प्रकार के मादक पदार्थों एवं औषधियों का सेवन भी करता है, फिर भी उसे किसी भी स्थिति में सुख व शान्ति का अपेक्षित बोध नहीं मिल पाता है। इन सबका कारण यह है कि उसने भौतिकता की ललक में अपने जीवन–दर्शन को एक पक्षीय बना दिया है, जबकि व्यक्तित्व के संतुलन के लिये वह आवश्यक है कि तन और मन अर्थात भौतिक एवं आध्यात्मिक दोनों ही आयामों को अपेक्षित मात्रा में विकसित किया जाये। क्योंकि इससे व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास में जहाँ एक ओर पर्याप्त सहायता मिलती है, वहीं दूसरी ओर व्यक्ति अपने परिवेश के साथ उपयुक्त सामंजस्य बनाये रखने में सक्षम होता है।

भौतिक प्रगति की ओर अबाध गति से बढ़ते हुए आज मानव ने अपने आध्यात्मिक पक्ष को उतना अधिक विकसित करने का प्रयास नहीं किया है जितना कि उसकी समग्रता एवं समरसता के लिए अत्यन्त आवश्यक है। यह सत्य है कि मनुष्य अपनी चेतना का भौतिक दिशा में अपेक्षित प्रयोग कर रहा है। क्योंकि इसी के परिणाम स्वरूप संचार एवं यातायात सुविधाओं में उसने आशातीत सफलता अर्जित की है। यही नहीं अन्य क्षेत्रों में भी उसने विशेष उपलब्धियाँ अर्जित की है। किन्तु इन सब के बावजूद उसके मन में विघटनकारी प्रवृत्तियाँ ही प्रबल रूप से विकसित हुई हैं। उसने अपने को भौतिक साधनों का कर्ता मानकर पाखंड एवं दमी की विषैली नदी में अपना सर्वस्व विनष्ट करने का प्रयास किया है। क्योंकि भौतिक सुख–सुविधाओं के अम्बार में उलझी हुई वासनायें उसे कभी सुख एवं शान्ति प्रदान नहीं कर पाती हैं। शायद यही कारण है कि वह निरन्तर असहनशीलता एवं असहिष्णुता का शिकार हो रहा है। अपने स्वार्थ की सिद्धि के लिये वह अपना सर्वस्य दाँव पर लगाने में तनिक भी संकोच नहीं करता है। ऐसी स्थिति में वह अनेक प्रकार की विसंगितयों का शिकार होता हुआ यथार्थ के दर्शन से दूर होता जा रहा है। क्योंकि उसके चिन्तन में कलुष, तमस एवं कुण्ठा के भाव सर्वाधिक विकसित हो रहे है। वह जितना अधिक स्वयं को समायोजित करने का प्रयास करता है उतना ही अधिक वासनाओं के जाल में उलझता जाता है क्योंकि उसके मानस में जलती हुई ईर्ष्या एवं तृष्णा की ज्वालायें उसे संतप्त होने के लिये अनवरत् आकुल ही बनाये रखती हैं।

आधुनिकता के विविध आयामों में लिप्त होने कारण मानव अपने वास्तविक स्वरूप से निरंतर दूर हटता जा रहा है। उसमें सहज स्नेह, प्रेम, सहयोग, सात्वीकरण, सामंजस्य जैसे सामाजिक गुण सिमटते जा रहे हैं। इन्हीं मानवीय गुणों का धारण करने के लिए हमारे आचार्यों ने ज्ञान, भाव एवं कर्म के समीचीन संदर्भों में मानवीय योग्यताओं एवं क्षमताओं को परिवेश के अनुरूप विकसित करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है क्योंकि मनुष्य में

* शोधार्थी, श्री जे.जे.टी. विश्वविद्यालय, झूझूनू, राजस्थान।

देवीय एवं आसुरी प्रवृत्तियाँ विद्यमान रहती है। व्यक्ति आसुरी प्रवृत्तियों के अनुबंधनों में अपने जीवन को नष्ट न करे। इसीलिए चार पदार्थों की व्याख्या में धर्म को सबसे महत्वपूर्ण माना गया है। मनुष्य जो कुछ भी करें। वह धर्म की परिधि में ही हो। क्योंकि धर्म मानव जीवन के संगठित व्यक्तित्व एवं उसकी संवेगात्मक स्थिरता का वह आधार है जिसमें व्यक्ति अनेक अनावश्यक विसंगतियों से स्वयं को अलग करता हुआ आदर्श के धरातल पर सदैव मनुष्यता से ओत–प्रोत रहता है। यह सत्य है कि अर्थ और काम की आँधी में मनुष्य अनेक प्रकार की विषमताओं से ग्रसित हो रहा है। परिवार, समाज, शैक्षिक संस्थान यही नहीं हमारे सत्ता के गलियारों में भी उचित–अनुचित का भेद सिमटता जा रहा है। ऐसे वातायन में सम्पूर्ण मानव समाज सब कुछ होते हुए भी स्वयं को असहाय पा रहा है। ऐसी स्थिति में हमारे नौनिहाल एवं किशोर छात्र–छात्राऐं अपने शैक्षिक संदर्भों में परिष्कृत विचारों, भावों एवं कृत्यों से वंचित होते जा रहे है। उन्हें समुचिवत मार्गदर्शन ने मिलने के कारण उनकी सम्पूर्ण मनोशारीरिक क्षमताऐं उन्हें अभिशप्त होने के लिए बाध्य कर रही है। इस परिप्रेक्ष्य में छात्र एवं छात्राएं मानव जीवन के उन महत्वपूर्ण पक्षों को अपनाने में चैतन्य एवं जाग्रत हो। वे विध्वंसों से हटकर सकारात्मक क्रियाओं की ओर अग्रसर हों। उनमें सकारात्मक सोच का विकास हो। उनमें अध्ययन एवं अध्यवसाय की प्रवृत्ति विकसित हो। उनकी शैक्षिक उपलब्धि उनके लिए और समाज के लिए उपयोगी हो। इन सभी पक्षों को ध्यान में रखने के लिए शोधकर्त्ता ने अपने शोध के लिए इस तरह की शोध समस्या का चयन किया है।

व्यक्ति एवं समाज को नये आयाम प्रदान करने के लिये वैज्ञानिक ने अनेक प्रकार के साधनों का विकास किया है। यही कारण है कि आज मानव सागर की अनन्त गहराई से लेकर व्योम की अनन्त ऊँचाई तक पहुँचने में किसी न किसी रूप में सक्षम हुआ है। संचार एवं यातायात के साधनों ने सम्पूर्ण विश्व को उसके निकट स्थापित कर दिया है। उसके पास वैभव एवं विलास की सभी सुख–सुविधायें प्रचुर मात्रा में विद्यमान है। लेकिन इन सबके बावजूद भी उसका मन क्षुब्ध एवं अशांत है। वह भरसक प्रयत्न करने के बावजूद भी प्रगाढ़ निन्द्रा से वंचित है। उसके मनस में निरन्तर कभी न शान्ति होने वाली एक ऐसी हलचल बनी रहती है जो उसे अनेक प्रकार के मादक पदार्थों के सेवन के लिये बाध्य करती है। यही कारण है कि विश्व के विकासशील, अविकसित एवं विकसित इन सभी राष्ट्रों में मादक पदार्थों का व्यापार अवैध रूप से खूब पनप रहा है। प्रत्येक समाज में अर्थ एवं काम की प्रबल भावनायें विकसित हो रही हैं। इदम् लालसाओं के अनवरत् प्रहार में मानवीय चिन्तन और चेतना निरन्तर विसर्जन और विघटन का शिकार हो रही है। उसका सब कुछ छीन लिया गया है, क्योंकि हमने उन पक्षों को अधिक महत्व दिया, जिसमें तमस, कलुष, आतंक एवं अपराध की प्रवृत्तियाँ बलवती होती हैं जबकि मानव सहज एवं चैतन्यशील प्राणी है। वह सुख एवं शान्ति का जीवन तभी व्यतीत कर सकता है, जब उसमें संवेगों का समुचित विकास हो और उसका परिवेश समुचित संवेगों

vfHkdYi

किसी भी शोध कार्य का उद्देश्य समस्या का उत्तर प्राप्त करना या किसी सुझाये गये उत्तर की जाँच करना होता है। प्रस्तुत अनुसंधान कार्य का प्रमुख उद्देश्य ''कला, विज्ञान एवं वाणिज्य संकायों के स्नातक छात्र–छात्राओं की संवेगात्मक एवं समायोजनशीलता का सामाजिक–आर्थिक परिप्रेक्ष्य में अध्ययन'' करना है। इस सम्बन्ध में उपयुक्त तथ्यों को प्रापत कर एक निश्चित निष्कर्ष तक पहुँचना होता है। अतः किसी भी शोध कार्य की योजना बनाते समय इसके लिए उपयुक्त अभिकल्प का चुनाव किया जाता है। प्रस्तुत शोध कार्य के उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए इसके अभिकल्प के स्वरूप को निम्नलिखित रूप में प्रस्तुत किया गया है–

वर्तमान शोध कार्य अनेक चरों से युक्त ''एक्स–पोस्ट–फैक्टो'' अनुसंधान के अन्तर्गत आता है। इसका स्वरूप प्रयोगात्मक अनुसंधान कार्य से भिन्न है, क्योंकि प्रयोगात्मक अनुसंधान में शोधकर्ता आश्रित चर पर स्वतंत्र चर के प्रभाव को देखती है तथा उसे स्वतंत्र रूप से नियंत्रित करती है। ''एक्स–पोस्ट–फैक्टो'' अनुसंधान में शोधकर्ता स्वतंत्र चर को उन घटनाओं में देखने का प्रयास करती है, जो पहले से घटित हो चुकी हैं। इसमें शोधकर्त्ता स्वंतत्र चरों को नियत्रित नहीं करती, बल्कि आश्रित चरों के आधार पर खोज करती है। सामाजिक अनुसंधानों में जैसे– अभिवृत्ति, नेतृत्व, मूल्य, शैक्षिक–निष्पत्ति इत्यादि में इसका विशेष प्रयोग होता है। वर्तमान शोध कार्य भी किसी न किसी रूप में ''एक्स–पोस्ट–फैक्टो'' अनुसंधान से सम्बन्धित है।

pj ;k ifjorh & प्रस्तुत शोध अध्ययन में चरों का प्रस्तुतीकरण निम्नलिखित है :–

- **LorU= pj &**प्रस्तुत शोध अध्ययन में प्रयुक्त स्वतंत्र चरों का विवरण निम्नलिखित है–
  - **ladk;**– कला, विज्ञान एवं वाणिज्य (तीन स्तर)।
  - **fyax &** स्नातक छात्र–छात्रायें (दो स्तर)।
  - **lkekftd&vkfFkd**– उच्च, मध्य एवं निम्न (तीन स्तर)।

- **vkfJr pj &** प्रस्तुत शोध अध्ययन के आश्रित चरों का विवरण निम्नलिखित है–
  - **laoxkRed ifjiDork ¼mi;qDrrk½ &** संवेगात्मक तनाव, संवेगात्मक नैराश्य, सामाजिक दूरी, व्यक्तित्व विघटन एवं प्रभुत्व हीनता (पाँच पक्ष) के साथ सम्पूर्ण क्षेत्र को भी इसमें शामिल किया गया है।
  - **lek;kstu'khyrk &** स्वास्थ्य, गृह, संवेगात्मक, सामाजिक एवं आथिक (पाँच स्तर) के साथ सम्पूर्ण क्षेत्र को भी शामिल किया गया है।
- **mi;kstfxd pj–** प्रस्तुत अध्ययन के अन्तर्गत प्रासंगिक चरों का विवरण इस प्रकार है–

  संस्कृति, धर्म, व्यवसाय, आय, बौद्धिक स्तर, आकांक्षा स्तर, प्रेरणा, शैक्षिक स्तर, क्षेत्र इत्यादि।

इन प्रमुख प्रासंगिक चरों का नियन्त्रण स्थिरता विधि, निष्कासन विधि या यादृच्छीकरण विधि द्वारा किया गया है। चरों को उनके स्वरूप एवं स्थिति के आधार पर ही नियंत्रित किया गया है। आश्रित चरों के विवरण को तालिका संख्या 1 में प्रस्तुत किया गया है–

rkfydk 1¼ vkfJr pjksa dh rkfydk

lkekftd& vkfFkd Lrj	ladk;	fyax		laoxkRed mi;qDrrk ¼ifjiDork½	lek;kstu'khyrk
		Lukrd Nk=	Lukrd Nk=k;sa		
उच्च	कला	40	40	संवेगात्मक तनाव संवेगात्मक नैराश्य सामाजिक दूरी व्यक्तित्व विघटन प्रभुत्वहीनता सम्पूर्ण क्षेत्र	स्वास्थ्य गृह सामाजिक संवेगात्मक आर्थिक सम्पूर्ण क्षेत्र
मध्य	विज्ञान	40	40	उपर्युक्त	उपर्युक्त
	वाणिज्य	40	40	उपर्युक्त	उपर्युक्त
	कला	40	40	उपर्युक्त	उपर्युक्त
निम्न	विज्ञान	40	40	उपर्युक्त	उपर्युक्त
	वाणिज्य	40	40	उपर्युक्त	उपर्युक्त
	कला	40	40	उपर्युक्त	उपर्युक्त
	विज्ञान	40	40	उपर्युक्त	उपर्युक्त
	वाणिज्य	40	40	उपर्युक्त	उपर्युक्त

यह अध्ययन कला, विज्ञान एवं वाणिज्य संकायों के स्नातक छात्र–छात्राओं की संवेगातमक उपयुक्तता एवं समायोजनशीलता का सामाजिक–आर्थिक परिप्रेक्ष्य में अध्ययन के मापन के लिये किया गया है। इसमें उपयुक्त परीक्षणों का प्रयोग किया गया है। जिन्हें प्रतिदर्श के सभी छात्र एवं छात्राओं पर अनुशासित किया गया है।

izfrn'kZ

किसी भी अनुसंधान कार्य में तथ्यों को एकत्रित करने के लिये उपयुक्त प्रतिदर्श की आवश्यकता होती है। क्योंकि इसके अभाव में किसी भी समस्या के सन्तोषजनक परिणाम प्राप्त नहीं हो सकते हैं तथा प्रतिदर्श के अभाव में सम्पूर्ण अनुसंधान कार्य निरर्थक हो जाता है। इसीलिये अनुसंधान कार्य में प्रतिदर्श की परम आवश्यकता होती है। जब हम समग्र में Total Population (जिनके सम्बन्ध में हम अध्ययन करना चाहते हैं) का कुछ प्रतिनिधित्व तत्वों के द्वारा चयन उपयुक्त विधियों के माध्यम से कर लेते हैं तब तत्वों के समूह को प्रतिदर्श कहते हैं और इसकी सम्पूर्ण इकाई को पोपुलेशन या समग्र कहते हैं। किसी भी स्थिति में सम्पूर्ण पोपुलेशन का मापन प्रायः सम्भव नहीं होता है। इसलिये उसमें से एक ऐसे समूह का चयन किया जाता है, जो उनका प्रतिनिधित्व कर सके। प्रस्तुत शोध कार्य के लिए अलीगढ़ जनपद के कला, विज्ञान एवं वाणिज्य संकायों के स्नातक छात्र–छात्राओं को स्तरानुसार यादृच्छीकरण प्रतिदर्श विधि के द्वारा चुना गया है। जिनकी आयु 17 से 20 वर्ष के बीच है। इस तरह प्रतिदर्श में चुने गये कला, विज्ञान एवं वाणिज्य संकायों के स्नातक छात्र–छात्राओं की संख्या 760 है जिनमें 360 कला, विज्ञान एवं वाणिज्य संकायों के स्नातक छात्र तथा 360 कला, विज्ञान एवं वाणिज्य संकायों की स्नातक छात्रायें हैं। उच्च सामाजिक–आर्थिक स्तर के अन्तर्गत 240 कला, विज्ञान एवं वाणिज्य संकायों के स्नातक छात्र–छात्राओं को चुना गया है। इसी प्रकार मध्य सामाजिक–आर्थिक स्तर के 240 स्नातक छात्र–छात्राओं को कला, विज्ञान एवं वाणिज्य संकायों से चुना गया है। प्रस्तुत शोध कार्य का प्रारूप निम्न तालिका में प्रस्तुत किया गया है–

rkfydk 2

lkekftd vkfFkd Lrj	l¡dk;						;ksx
	dyk fy¡x		foKku fy¡x		okf.kT; fy¡x		
	Lukrd Nk=	Lukrd Nk=k;¡	Lukrd Nk=	Lukrd Nk=k;¡	Lukrd Nk=	Lukrd Nk=k;¡	
उच्च	40	40	40	40	40	40	240
मध्य	40	40	40	40	40	40	240
निम्न	40	40	40	40	40	40	240
;ksx	120	120	120	120	120	120	720

प्रतिदर्श को अलीगढ़ जनपद से इसलिये चुना गया है, क्योंकि यहाँ पर अनेक प्रकार की शिक्षण संस्थायें विद्यमान हैं। इसके साथ ही साथ इस नगर में लघु एवं बड़े उद्योग–धन्धों का जाल बिछा हुआ है। यह जनपद अपने ताला उद्योग, भवन निर्माण सामग्री तथा मूर्तियों के निर्माण के लिये भारत में ही नहीं बल्कि सम्पूर्ण विश्व में प्रसिद्ध है। इसी प्रकार से यह नगर अनेक प्रकार के उद्योग धन्धों से युक्त है। यातायात एवं संचार की उपयुक्त सुविधा होने के कारण जनपद का विकास अत्यधिक तीव्र गति से हो रहा है। अपने विकास के कारण ही इस जनपद ने महानगर के साथ–साथ मण्डल का दर्जा प्राप्त किया है। इस जनपद में यद्यपि हिन्दू एवं मुस्लिम धर्मों के लोगों का बाहुल्य है तथा दोनों ही संस्कृतियों के लोग अपने–अपने ढंग से रहते हैं। फिर भी इनमें आपस में बहुत ही घनिष्ठ सम्बन्ध है। यहाँ के लोग एक दूसरे के बहुत ही निकट हैं। अतः प्रस्तुत अनुसंधान कार्य के लिये अलीगढ़ जनपद के कला, विज्ञान एवं वाणिज्य संकायों के स्नातक छात्र–छात्राओं की संवेगात्मक उपयुक्तता (परिपक्वता) एवं समायोजनशीलता का सामाजिक–आर्थिक परिप्रेक्ष्य में अध्ययन एक विशेष महत्व रखता है।

v/;;u lkexzh

प्रस्तुत शोध कार्य कला, विज्ञान एवं वाणिज्य, संकायों के स्नातक छात्र–छात्राओं की संवेगात्मक उपयुक्तता (परिपक्वता) एवं समायोजनशीलता का सामाजिक–आर्थिक परिप्रेक्ष्य से सम्बन्धित है। ऐसी स्थिति में यह परम आवश्यक है कि प्रदत्तों के संकलन के लिये उपयुक्त अध्ययन सामग्रियों का चयन किया जाय। जिससे प्राप्त होने वाले परिणाम विश्वसनीय एवं उपयोगी हो। इस सम्बन्ध में तथ्यों, विधियों और तकनीकियों का सूक्ष्म एवं गहन अध्ययन करने के पश्चात् यह पाया गया कि प्रस्तुत शोधकार्य के लिये निम्नलिखित परीक्षण अत्यधिक महत्वपूर्ण हैं क्योंकि इनकी वैधता, विश्वसनीयता तथा वस्तुनिष्ठता किसी भी स्थिति में संदेह से परे है। वर्तमान अनुसंधान कार्य के लिये जिन परीक्षणों का चयन किया गया है। वे इस प्रकार हैं–

- संवेगात्मक उपयुक्तता का मापन करने के लिए डॉ0 आर.पी. सिंह की संवेगात्मक परिपक्तवता मापनी।
- समायोजनशीलता का मापन करने के लिए डॉ0 आर.पी. सिंह की व्यक्तित्व समायोजन सूची।

laosxkRed ifjiDork ekiuh dk fooj.k

प्रस्तुत संवेगात्मक परिपक्वता मापनी का निर्माण डॉ0 आर.पी. सिंह, मनोविज्ञान विभाग, श्री वार्ष्णेय महाविद्यालय, अलीगढ़ द्वारा 1994 में किया गया है। इस मापनी में कुल 60 पद हैं। जो संवेगात्मक–परिपक्वता के पाँच क्षेत्रों जैसे– संवेगात्मक तनाव, संवेगात्मक–नैराश्य, सामाजिक–दूरी, व्यक्तित्व–विघटन एवं प्रभुत्व–हीनता से सम्बन्धित हैं। प्रत्येक क्षेत्र में बारह–बारह पदों को रखा गया है। जिनका विवरण इस प्रकार हैं–

rkfydk 3

in l¡[;k	{ks=
1 – 12	संवेगात्मक– तनाव
13 – 24	संवेगात्मक– नैराश्य
25 – 36	सामाजिक– दूरी
37 – 48	व्यक्तित्व– विघटन
49 – 60	प्रभुत्वहीनता

Qykadu fof/k

प्रस्तुत मापनी के पाँच बिन्दुओं जैसे– बहुत अधिक, अधिक तटस्थ, कम एवं बहुत कम इन सभी बिन्दुओं में से किसी एक पर सही (✔) का निशान लगाकर प्रतिक्रिया व्यक्त करनी होती है तथा इनमें बहुत अधिक को पाँच (5) अंक, अधिक को चार (4) अंक, तटस्थ को (3) अंक, कम को दो (2) अंक तथा बहुत कम को एक (1) अंक प्रदान किया जाता है। इस मापनी में यह तथ्य महत्वपूर्ण है कि अत्यधिक अंक संवेगात्मक अपरिपक्वता तथा कम अंक संवेगात्मक–परिपक्वता को व्यक्त करते हैं।

fo'oluh;rk

प्रस्तुत मापनी की विश्वसनीयता ''परीक्षण पुनः परीक्षण'' तथा ''आन्तरिक–स्थिरता विधि'' द्वारा ज्ञात की गयी है। प्रस्तुत विधि के अन्तर्गत कालेज वाले एवं कालेज न जाने वाले 160 विद्यार्थियों पर जिनकी आयु 15 वर्ष से ऊपर थी, उन पर इस मापनी का प्रयोग किया गया। परीक्षण एवं पुनः परीक्षण के मध्य तीन सप्ताह का अन्तराल रखा गया। प्राप्त अंकों के बीच सह–सम्बनध गुणांक 0.86 है जो ''प्रोडक्ट मोमेन्ट विधि' द्वारा ज्ञात किया गया। आन्तरिक स्थिरता विधि के द्वारा भी इसकी विश्वसनीयता को ज्ञात किया गया। इसके लिए सम्पूर्ण क्षेत्र के कुल प्राप्तांकों तथा पाँच अलग–अलग क्षेत्रों के बीच सह–सम्बनध गुणांक ज्ञात करके निर्धारित किया गया। जिसका विवरण इस प्रकार है–

rkfydk 4

{k=	lg lEcU/k x.kkd
संवेगात्मक– तनाव	.82
संवेगात्मक– नैराश्य	.75
सामाजिक– दूरी	.72
व्यक्तित्व– विघटन	.84
प्रभुत्वहीनता	.76

o/krk

प्रस्तुत मापनी की वैधता की वार्ष्णेय महाविद्यालय के मनोविज्ञान विभाग द्वारा निर्मित समायोजन–सूची के आधार पर ज्ञात की गयी। जिसमें पाया गया कि समायोजन–सूची के संवेगात्मक क्षेत्र के प्राप्ताकों तथा संवेगात्मक–तनाव एवं संवेगात्मक–नैराश्य क्षेत्र के प्राप्तांकों के मध्य धनात्मक सहसम्बन्ध विद्यमान है और यह सह–सम्बन्ध गुणांक .78 तथा .82 पाया गया। जो 50 विद्यार्थियों के प्राप्तांकों पर आधारित है। इसके अतिरिक्त सामाजिक क्षेत्र तथा सामाजिक–दूरी क्षेत्र के प्राप्तांकों के बीच भी पर्याप्त उच्च सह–सम्बन्ध पाया गया। यह सह–सम्बन्ध गुणांक .76 रहा है।

ekud

प्रस्तुत मापनी का मानक ग्रामीण एवं शहरी तथा उच्च, मध्य एवं निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर से सम्बन्धित 15 वर्ष तथा इससे ऊपर की आयु के शिक्षित एवं अशिक्षित 500 पुरुष एवं 500 स्त्रियों के प्राप्तांकों के आधार पर ज्ञात किया गया। जिसका विवरण इस प्रकार है–

rkfydk 5

in l[;k	lEi.kZ {k= ikIrkd	fooj.k
12	60	अत्यधिक स्थिर
13 – 24	61 – 120	स्थिर
25 – 36	121 – 180	सामान्य स्थिर
37 – 48	181 – 240	अस्थिर
49 – 60	241 – 300	अत्यधिक अस्थिर

0;fDrRo lek;kstu lwph dk fooj.k

व्यक्तित्व समायोजन सूची का निर्माण 1994–95 में डॉ. आर.पी. सिंह द्वारा किया गया है। प्रस्तुत सूची में प्रारम्भ में 400 पदों को रखा गया था। मनोवैज्ञानिकों नैदानिकों एवं अन्य विद्वानों की राय के आधार पर इसमें कुल 200 पदों को रखा गया। पुनः पद – विश्लेषण के आधार पर अंतिम रूप से इसमें 100 पदों को सम्मिलित किया गया है। इसमें कुल पाँच क्षेत्र हैं, जैसे– स्वास्थ्य, गृह, सामाजिक, संवेगात्मक एवं आर्थिक। इसके अन्तर्गत प्रत्येक क्षेत्र में 20 पदों को रखा गया है।

Qykdu fof/k

प्रस्तुत सूची में दिये गये पदों के सामने 'हाँ' तथा 'नहीं' लिखा गया है। सूचनादाता को इनमें से किसी पर एक पर सही (✔) का निशान लगाना होता है। इसी सूची का प्रारूप इस प्रकार है कि प्रत्येक प्राप्तांक असमायोजन को व्यक्त करता है। ''हाँ'' अनुक्रिया देने पर 'एक' (1) अंक एवं 'नहीं' अनुक्रिया देने पर 'शून्य' (0) अंक प्रदान किया जाता है। इस प्रकार व्यक्तित्व समायोजन के क्षेत्र से सम्बन्धित पदों का विवरण निम्नलिखित तालिका में प्रस्तुत किया गया है–

fu"d"k ,oa lq>ko

सम्पूर्ण शोध प्रबन्ध के विश्लेषण एवं व्याख्या के पश्चात् महत्वपूर्ण कार्य उद्देश्यों की पूर्ति एवं परिकल्पनाओं के संदर्भ में उनको स्वीकार या अस्वीकार करना होता है। इसलिए वैज्ञानिक अध्ययन के लिए परिकल्पनाओं का होना अत्यन्त आवश्यक है। प्रस्तुत शोध में निराकरणीय परिकल्पनाओं का निर्माण किया गया है। निराकरणीय परिकल्पना की यह धारणा होती है कि स्वतंत्र चर के प्रभाव के कारण दो या दो से अधिक समूहों में परतंत्र चर के सन्दर्भ में कोई वास्तविक अंतर नहीं होता है। जो अंतर देखने में आता है। उसका कारण प्रतिचयन सम्बन्धित त्रुटियाँ या संयोगजन्य त्रुटियों हो सकती है किन्तु स्वतंत्र चर का प्रभाव उसका कारण नहीं है। निराकरणीय परिकल्पना के अन्तर्गत दो समूहों के अंतर की सार्थकता की जाँच के लिए आवश्यक 'टी' का मान द्विपक्षीय परीक्षण के आधार पर देखना होता है। साथ ही साथ स्वतंत्रता के अंशों को भी ध्यान में रखना होता है। इसलिए यह ज्ञात करना अनिवार्य है कि प्रस्तुत परिकल्पनायें प्राप्त किये गये निष्कर्षों के आधार पर स्वीकार होती है या अस्वीकार होती हैं। प्रस्तुत अनुसंधान में कुल 12 आश्रित परिवर्ती है। जिन पर संकायों (कला, विज्ञान एवं वाणिज्य), लिंग (स्नातक छात्र एवं छात्रायें) तथा सामाजिक–आर्थिक स्तर (उच्च, मध्य एवं निम्न) का प्रभाव देखा गया है। इन 12 आश्रित परिवर्तियों में संवेगात्मक उपयुक्तता (परिपक्वता) के सम्पूर्ण क्षेत्र सहित 6 आश्रित परिवर्ती हैं। जैसे– संवेगात्मक तनाव, संवेगात्मक नैराश्य, सामाजिक दूरी, व्यक्तित्व विघटन, प्रभुत्वहीनता एवं सम्पूर्ण क्षेत्र।

समायोजनशीलता के सम्पूर्ण क्षेत्र सहित 6 आश्रित परिवर्ती है। जैसे– स्वास्थ्य, गृह, सामाजिक, संवेगात्मक, आर्थिक एवं सम्पूर्ण क्षेत्र। इस सम्बन्ध में विचारणीय बात यह है कि संवेगात्मक उपयुक्तता (परिपक्वता) एवं समायोजनशीलता के विभिन्न पक्षों में कम अंक धनात्मक स्वरूप को व्यक्त करते हैं। जबकि अधिक अंक इनके ऋणात्मक स्वरूप को व्यक्त करते हैं। विवेचन एवं परिणामों के आधार पर निष्कर्ष रूप में निराकरणीय परिकल्पनाओं को निम्नलिखित रूप में प्रस्तुत किया जा सकता है–

- fu"d"k lq[;k 1& हमारी पहली निराकरणीय परिकल्पना इस प्रकार है स्नातक स्तर के छात्र–छात्राओं की संवेगात्मक उपयुक्तता में सार्थक अंतर नहीं होता है। प्रस्तुत परिकल्पना को स्वीकार या अस्वीकार करने के लिए तालिका 4.1 के परिणामों का अवलोकन किया गया है। इससे यह स्पष्ट होता है कि संवेगात्मक उपयुक्तता (परिपक्वता) के संवेगात्मक नैराश्य, सामाजिक दूरी एवं प्रभुत्वहीनता क्षेत्रों में स्नातक स्तर के छात्र–छात्राओं के मध्यमानों में पाया गया अंतर .05 स्तर पर भी सार्थक नहीं हो सका है। संवेगात्मक परिपक्वता के संवेगात्मक तनाव क्षेत्र में इन दोनों समूहों के मध्यमानों में पाया गया अंतर .05 स्तर पर सार्थक पाया गया है। संवेगात्मक परिपक्वता के ही व्यक्तित्व विघटन क्षेत्र में इन दोनों समूहों के मध्यमानों में पाया गया अंतर .01 स्तर पर सार्थक पाया गया है। संवेगात्मक परिपक्वता के सम्पूर्ण क्षेत्र में इन दोनों समूहों के मध्यमानों में पाया गया अंतर .05 स्तर पर भी सार्थक नहीं पाया गया है। अतः पहली निराकरणीय परिकल्पना स्वीकार की जा सकती है।
- fu"d"k lq[;k 2&हमारी दूसरी निराकरणीय परिकल्पना इस प्रकार है स्नातक स्तर के छात्र–छात्राओं की समायोजनशीलता में सार्थक अंतर नहीं होता है। प्रस्तुत परिकल्पना को स्वीकार या अस्वीकार करने के लिए तालिका 4.2 के परिणामों का अवलोकन किया गया। इससे यह स्पष्ट होता है कि व्यक्तित्व समायोजन के सामाजिक क्षेत्र में स्नातक स्तर के छात्र–छात्राओं के मध्यमानों में पाया गया अंतर .01 स्तर पर सार्थक पाया गया है। व्यक्तित्व समायोजन के स्वास्थ्य, गृह, संवेगात्मक एवं आर्थिक क्षेत्रों में इन दोनों समूहों के मध्यमानों में पाया गया अंतर .05 स्तर पर भी सार्थक नहीं हो सका है व्यक्तित्व समायोजन के सम्पूर्ण क्षेत्र में इन दोनों समूहों के मध्यमानों में पाया गया अंतर .05 पर भी सार्थक नहीं पाया गया है। अतः हमारी दूसरी निराकरणीय परिकल्पना स्वीकार की जा सकती है।
- fu"d"k lq[;k 3& हमारी तीसरी निराकरणीय परिकल्पना इस प्रकार है कला एवं विज्ञान संकायों के स्नातक छात्र–छात्राओं की संवेगात्मक उपयुक्तता में सार्थक अंतर नहीं होता है। प्रस्तुत परिकल्पना को स्वीकार या अस्वीकार करने के लिए तालिका 4.3 के परिणामों का अवलोकन किया गया है। इससे यह स्पष्ट होता है कि सवेंगात्मक उपयुक्तता (परिपक्वता) के संवेगात्मक तनाव, सामाजिक दूरी एवं व्यक्तित्व विघटन क्षेत्रों में कला एवं विज्ञान संकायों के स्नातक छात्र–छात्राओं के मध्यमानों में पाया गया अंतर .05 स्तर पर भी सार्थक नहीं हो सका है। संवेगात्मक परिपक्वता के प्रभुत्वहीनता क्षेत्र में इन दोनों समूहों के मध्यमानों में पाया गया अंतर .01 स्तर पर सार्थक पाया गया है। संवेगात्मक परिपक्वता के ही संवेगात्मक नैराश्य क्षेत्र में इन दोनों समूहों के मध्यमानों में पाया गया अंतर .05 स्तर पर सार्थक

पाया गया है। संवेगात्मक परिपक्वता के सम्पूर्ण क्षेत्र में इन दोनों समूहों के मध्यमानों में पाया गया अंतर .05 स्तर पर सार्थक पाया गया है। संवेगात्मक परिपक्वता के सम्पूर्ण क्षेत्र में इन दोनों समूहों के मध्यमानों में पाया गया अंतर .01 स्तर पर सार्थक पाया गया है। अतः हमारी यह तीसरी निराकरणीय परिकल्पना ने तो स्वीकार की जा सकती है और ना ही अस्वीकार की जा सकती है।

- fu"d"k l[;k 4&हमारी चौथी निराकरणीय परिकल्पना इस प्रकार है कला एवं विज्ञान संकायों के स्नातक छात्र–छात्राओं की समायोजनशीलता में सार्थक अंतर नहीं होता है। प्रस्तुत परिकल्पना को स्वीकार या अस्वीकार करने के लिए तालिका 4.4 के अवलोकन किया गया। इससे यह स्पष्ट होता है कि व्यक्तित्व समायोजन के सामाजिक क्षेत्र में कला एवं विज्ञान संकायों के स्नातक छात्र–छात्राओं के मध्यमानों में पाया गया अंतर .05 स्तर पर भी सार्थक नहीं हो सका है। व्यक्तित्व समायोजन के स्वास्थ्य, संवेगात्मक एवं आर्थिक क्षेत्रों में इन दोनों समूहों के मध्यमानों में पाया गया अंतर .01 स्तर पर सार्थक पाया गया है। व्यक्तित्व समायोजन के ही गृह क्षेत्र में इन दोनों समूहों के मध्यमानों में पाया गया अंतर .05 स्तर पर सार्थक पाया गया है। व्यक्तित्व समायोजन के सम्पूर्ण क्षेत्र में इन दोनों समूहों के मध्यमानों में पाया गया अंतर .01 स्तर पर सार्थक पाया गया है। अतः हमारी यह चौथी निराकरणीय परिकल्पना अस्वीकार की जा सकती है।
- fu"d"k l[;k 5&हमारी पाँचवी निराकरणीय परिकल्पना इस प्रकार है कला एवं वाणिज्य संकायों के स्नातक छात्र–छात्राओं की संवेगात्मक उपयुक्तता में सार्थक अंतर नहीं होता है। प्रस्तुत परिकल्पना को स्वीकार या अस्वीकार करने के लिए तालिका संख्या 4.5 के परिणामों का अवलोकन किया गया। इससे यह स्पष्ट होता है कि संवेगात्मक उपयुक्तता (परिपक्वता) के संवेगात्मक तनाव एवं सामाजिक दूरी क्षेत्र में कला एवं वाणिज्य संकायों के स्नातक छात्र–छात्राओं के मध्यमानों में पाया गया अंतर .05 स्तर पर भी सार्थक नहीं हो सका है। संवेगात्मक परिपक्वता के संवेगात्मक नैराश्य एवं प्रभुत्वहीनता क्षेत्रों में इन दोनों समूहों के मध्यमानों में पाया गया अंतर .01 स्तर पर सार्थक है। संवेगात्मक परिपक्वता के व्यक्तित्व विघटन क्षेत्र में इन दोनों समूहों के मध्यमानों का अंतर .05 स्तर पर सार्थक पाया गया है। संवेगात्मक परिपक्वता के सम्पूर्ण क्षेत्र में इन दोनों समूहों के मध्यमानों का अंतर .01 स्तर पर सार्थक पाया गया है। अतः हमारी यह पाँचवी निराकरणीय परिकल्पना अस्वीकार की जा सकती है।

l nHk xUFk lph

✠ अजीमी, एच.जे. एवं नूर इजियान मौहम्मद जकी (2010): सेल्फ स्टीम, इमोशनल मैच्योरिटी एण्ड सेल्फ इफिकेसी ऑफ यूथ पाटिसिपेटिंग इन थियेटर परफोर्मेन्स। पी–एच.डी. थीसिस सबमिट इंस्टीट्यूट फॉर कम्युनिटी एण्ड पीस स्टडीज।

✠ अब्दुलगनी अल हतामी एवं अन्य (2014): एकेडेमिक एण्ड सोशल एडजस्टमेंट ऑफ अबर फुलब्राइट स्टूडेंट्स इन अमेरिकन यूनीवर्सिटीः ए केस स्टडी। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ ह्यूमैनिटीज एण्ड सोशल सांइस।

✠ अम्र ए. स्वीड (2012): द मॉडरेटिंग रोल ऑफ सोशियलाइजेशन एफर्ट्स इन न्यूकमर एडजस्टमेंट। इंटरनेशनल जर्नल ऑु इकोनोमिक्स एण्ड बिजनेस रिसर्च। वॉल्यूम–4, अंक–3, पृष्ठ 233–252

✠ आर.एल. भरसाखले (2013):ए स्टडी ऑफ मैरिज एटीट्यूड एण्ड एडजस्टमेंट एमोंग आर्ट एण्ड सांइस फैकल्टी स्टूडेंट्सं गोल्डन रिसर्च थॉट्स। वॉ0–2, इश्यू–12, पृ. 1–7

✠ आर्मिन महमोउदी (2012): इमोशनल मैच्योरिटी एण्ड एडजस्टमेंट लेविल ऑफ कॉलेज स्टूडेंटस। एजूकेशन रिसर्च जर्नल। वॉ–2, नं.–1, पृ. 18–19

✠ ऑलपोर्ट जी. डब्ल्यू. (1961)': पर्सनालिटी ए साइकोलोजिकल इण्टरप्रीटेशन हॉल्ट न्यूयार्क

✠ इफेओमाओ ई. ओबी (2012): एकेडेमिक एडजस्टमेंट एमोंग फर्स्ट ईयर अंडरग्रेजुएट स्टूडेंट एट अनाम्ब्रा स्टेट यूनिवर्सिटी। ए जर्नल ऑफ कांटेम्पोरेरी रिसर्च। वॉ –9 (3), पृ. 49–56

♦❒♦